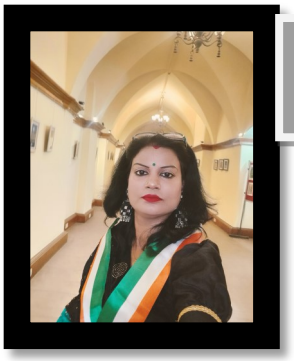

सरिता सिंह

गोरखपुर

मनुज पार कैसे आएगा

तन है घायल मन भी घायल
फिर करार कैसे आएगा।
वर्तमान की कठिन दशा में
कहो! प्यार कैसे आएगा।
देख मनुज कितना प्यासा है,
बैठ यहाँ पर छद्मवेश में।
युगों-युगों से उहापोह में ,
फँसा हुआ निज स्वार्थ, द्वेष में।
काया का अभिमान हैं मन में ,
जन-चेतन का ध्यान नहीं।
अंदर यदि मद-लोभ-कामना,
सदाचार कैसे आएगा ।
आज़ादी का सूरज अब तो
विस्मृत है अँधियारों में ।
कलरव करना भूल गए हैं
पंछी अब गलियारों में।
बिखर गए हैं सारे सपने,
जो आँखों में हमने पाले।
मनभावन, पावन रिश्तों का
भला सार कैसे आएगा।
द्वेष भाव जिसके अन्दर है ,
राहु-केतु हैं जिसने पाले।
फेंके पासे शकुनी जैसे ,
मन के लगते हैं जो काले।
स्वयं खजाने भरता है जो
लूट जगत का हिस्सा हिस्सा।
ठगे हुए सारे लोगों को,
एतबार कैसे आएगा ।
किसने फेंका पत्थर किस पर
हिंसा किसने भड़काई।
किसने आग लगा मजहब की
नफरत इतनी फैलाई ।
जाति धर्म के पैगंबर जब
देंगे दंगों की शिक्षा।
अत्याचारों के सागर से
मनुज पार कैसे आएगा।